# रियासत टोंक का प्राचीन इतिहास

*मधु बजाज

राजस्थान में संगीत और नृत्य की जानकारी के प्रमाण हमें चम्बल घाटी में उपलब्ध ऐतिहासिक शिलालेखों, चित्रों, कलात्मक मन्दिरों, भवनों, पुरातत्त्व उत्खनन सामग्री प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों एवं इतिहास की पुस्तकों आदि के अध्ययन के दौरान हमें पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।

राजस्थान की विभिन्न रियासतों के अधिकांश राजा व महाराजा कला–प्रेमी थे, जो संगीत कला को विकसित करने में पूर्ण सहयोगी रहे। जो शासक स्वयं संगीतज्ञ थे और जिन्होंने अपने दौर में मूर्धन्य एवं प्रसिद्ध कलाकारों को आश्रय व संरक्षण दिया तथा ऐसे प्रसिद्ध कलाकारों को मान–सम्मान दिया जिन्होंने अपनी कलाओं की अभिवृद्धि से अतुलनीय कार्य किया जिसमें विभिन्न राज्यों के कलाकार विद्यमान थे। उणियारा के संग्राम सिंह, टोंक के नवाब इब्राहिम अली खाँ अलवर के शासक जयसिंह, विनय सिंह, शिवदान सिंह आदि राज्यों के शासकों ने भी कलाकारों को आश्रय देकर संगीत कला के विकास में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया।

वर्तमान राजस्थान आजादी से पूर्व राजपूताना कहलाता था। उसमें 20 से अधिक रजवाड़े अथवा देशी रियासतें, जागीरें, ठिकाने एवं कोठियाँ आदि सम्मिलित थे। उन्हीं में एक रियासत टोंक भी थी। जिसके शासक मुसलमान होने के कारण नवाब कहलाते थे। यह रियासत सन् 1817 ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी और रियासत के संस्थापक नवाब अमीरखान बहादुर के बीच एक राजनीतिक सन्धि द्वारा स्थापित हुई थी। जिसकी राजधानी राजपूताना के एक प्राचीन शहर टोंक को बनाया गया था।

भौगोलिक रूप से ये रियासत बड़ी विचित्र थी। क्योंकि रियासत में सम्मिलित टोंक शहर के अतिरिक्त रियासत के अन्य पाँच परगने (बस्तियाँ) इतने दूर–दूर थे कि भौगोलिक रूप में परगनों की भूमि भी एक–दूसरे से जुड़ी नहीं थी। उन परगनों में सबसे करीब अलीगढ़ रामपुरा था। जो टोंक शहर से 40 किलोमीटर दूर है और वहाँ जाने के लिए उणियारा ठिकाने की भूमि से गुजरना पड़ता था इसी प्रकार वर्तमान जिला झालावाड़ में सम्मिलित परगना पिड़ावा तक जाने के लिए बून्दी, कोटा, झालावाड़ जैसी रियासतों से गुजरना पड़ता था। यही हाल अन्य परगनों का था। जिनमें परगना सिरोंज भी शामिल था। जो उस दौर में मालवा का हिस्सा था। यह वर्तमान में मध्य प्रदेश में सम्मिलित है। ऐसी विचित्र भौगोलिक स्थिति के बावजूद टोंक के नवाबों ने जिस शान और शौक्त से रियासत में हुकूमत की वो अपने आप में मिसाल है। रियासत के प्रथम नवाब अमीर खान बहादुर ने सन् 1817 से 1834 ई० तक रियासत की हुकूमत की थी। उनके शासनकाल में एक मजबूत शासन की स्थापना हुई जहाँ विशेष रूप से इस्लामिक धर्म को माना जाता था।

टोंक बनास नदी के किनारे बसा हुआ है यहाँ कई सभ्यताओं का विकास हुआ है। बनास व उसके साथ बहने वाली मांसी, बारी व कई नदियों की घाटियों में खुदाई के दौरान पाषाण युग की वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। टोंक देवली आदि कई क्षेत्र हैं जिनमें उस युग के औजार और वस्तुयें मिली हैं तथा यह शहर टोंक अपने कई शिलालेखों, मकबरों, मजारों, मन्दिरों, मस्जिदों, छतरियों, खण्डहरों व गुफाओं आदि में खुदी वस्तुओं व औजारों से यह सिद्ध होता है कि टोंक का अस्तित्व विराट की सभ्यता से प्राप्त हुआ है इसमें कई घटनायें फारसी के ऐतिहासिक लेखों से प्राप्त की गई हैं और कुछ घटनायें मुद्रित इतिहास की पुस्तकों जैसे – अमीरनामा (फारसी) लेखक मुन्शी बसावन लाल श्शादश तजकरऐ टोंक लेखक साहबजादा अब्दुल तव्वाब खान, इतिवात्तवारीख लेखक मुन्शी देवी प्रसाद श्बशशाशश और तारीख–ए–टोंक उस्ताद आबरू से प्राप्त की गई थी।

बनास की स्वच्छ धारा के समीप बसे टोंक शहर में कई सभ्यताओं का जन्म हुआ और समाप्त हो गईं। ना जाने यहाँ कितने राजा–महाराजा, सूबेदार व सामन्त बनास के किनारे आए ओर चले गए बनास के इस शान्त वातावरण पर कई तूफान आए और ना जाने कितनी सभ्यताएँ नष्ट फिर भी यहाँ विकास का ध्वज पुनः लहराया।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में टोंक शहर की स्थापना के प्रारम्भिक दौर से रियासत की स्थापना तक का वर्णन किया गया है, तदोपरान्त रियासत काल के वर्णन से राजस्थान की स्थापना व वर्तमान समय तक की प्रगति तथा परिवर्तनों को वर्णित किया गया है। टोंक की स्थापना से संबंधित अहमद अली सीमाव की किताब श्गुलदस्ताएँ खिरदश में लिखा है कि शहर टोंक प्रारम्भ में यह जंगल वीरान था यहाँ मनुष्य आदि कोई नहीं रहते थे। यहाँ सिर्फ जानवरों के अतिरिक्त कोई नहीं रहता था। राजा टनन पाल तंवर ( देहली के राजा के भाई) के एक कर्मचारी था जिसका नाम खोजा राम सिंह था। दिल्ली के राजा का नाम खैनबाद था जिन्होंने खोजा रामसिंह को फौज देकर दक्षिण भारत में भेजा। जब रामसिंह अपनी फौज के साथ यहाँ आकर उतरा तो उसे यह स्थान बहुत पसन्द आया और उसने चारों ओर से अपने साथियों को बुलाकर यहाँ एक गाँव बसाया जिसका नाम टोंकड़ा रखा गया था तथा तेरहवीं तारीख माघ के महीने में शनिवार के दिन मुसलमानों की तारीख के अनुसार 925 साल पहले रामसिंह ने इस गाँव को बसाया। अहमद अली सीमाव ने टोंक के संबंध में उपरोक्त सूचना विभिन्न पुस्तकों के आधार पर वर्णित की है और अन्य पुस्तकों को पढ़ने से पता चलता है कि इसका खोजा नाम इसलिये पड़ा क्योंकि इन्होंने इस स्थान की खोज की तथा इस पहाड़ी के नीचे जिसको श्रसिया की टेकरीश कहते हैं। एक कस्बा बसाया जिसका नाम श्टोंकड़ाश था। सन् 1643 ई० में भोलानाथ जो गौड़ ब्राह्मण के गौत्र से संबंधित था आपने टोंकड़े से टोंक नाम रखा। जब से आज तक यह बस्ती और इस शहर का नाम टोंक के नाम से प्रसिद्ध है।

यह टोंक शहर हजारों सालों से आबाद रहा है। राजस्थानी भाषा में ऐसी पहाड़ी को जिसकी चोटी लम्बी हो और जो दूर तक आकाश में दिखाई दे 'टूंक' कहते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि टोंक का नाम संस्कृत शब्द श्टोंकाराश (नुकीली चट्टानें) होने के कारण ही टोंक हुआ।

इस क्षेत्र का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। इसका सरल भाषा में वास्तविक सीधा और सच्चा इतिहास है जो वास्तविक घटनाओं व साक्ष्यों पर आधारित एक संगठित और ऐतिहासिक अवलोकन है। रियासत टोंक की राजधानी शहर टोंक जिसमें प्राचीन सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक और व्यावसायिक मूल्यों को अपने आँचल में समाये हुए यह वर्णन है।

टोंक बनास नदी के किनारे ना जाने कितने ही योद्धा और विजेता आए और गए और कितने ही पराजित योद्धाओं को इस नदी ने बहाया और निकाला है। यहाँ पर मालवाओं, परमारों, मनोचियों, राजपूतों, सिसोदियों, चौहानों और कच्छावों का अधिकार रहा। इनके अतिरिक्त सुल्तान महमूद गजनवी, बलवन, गौरी, इल्तुतमिश, जहाँगीर, मुगल बादशाह अकबर, शाहजहाँ और औरंगजेब का भी शासन रहा और यही नहीं यहाँ नवाब बादा और ताँत्या टोपे भी सन् 1857 ई० में सहयोग की भावना लेकर आए और चले गए।

टोंक में एक ओर मुगल साम्राज्य का केन्द्र है तो दूसरी तरफ मराठा और पठानों का भी अधिकार रहा है। वर्तमान समय में बनास नदी की खुदाई के दौरान यह मालूम होता है कि न जाने इस जगह कितने ही शूरवीर योद्धा आए और उन्होंने यहाँ शासन किया।

यहाँ का अमीरगढ़ का किला, रसिया की टेकरी, देव का तालाब, तालाब अस्तल, मोहना मन्सूर का मजार आदि उस दौर की यादगारें हैं। टोंक रियासत से पूर्व यहाँ पर महाराजा सवाई जयसिंह, पृथ्वी सिंह, माधोसिंह, काशी राव होल्कर पीर जी साहब एवं खण्डे राव आदि लोगों के शासन करने के बाद सन् 1863 ई० में यह रियासत टोंक नवाब अमीर खाँ के अधिकार में आई।

यद्यपि रियासत टोंक राजस्थान की एक छोटी सी रियासत थी। परन्तु उसके इतिहास की इतनी पुस्तकें लिखी गई जो राजस्थान की दूसरी रियासतों में दृष्टिगत नहीं आतीं। इतिहास के रूप में रियासत की स्थापना के पश्चात् दीवान शम्सुद्दीन ने फारसी भाषा में श्वाकैआत हफ्तदरू साला अमीर–व–बिस्तसाला वजीरश के नाम से टोंक का इतिहास लिखा। ये इतिहास अँग्रेज रेजीडेन्ट के परामर्श पर लिखा गया था। उस समय तक रियासत टोंक की स्थापना के 37 वर्ष ही बीते थे तथा नवाब अमीर खान के देहान्त के पश्चात् उनके पुत्र वजीरुद्दौला नवाब नियुक्त हुए।

नवाब अमीर खाँ बहादुर ने 17 साल शासन किया और वजीर खाँ साहब को शासन करते हुये 20 वर्ष हो चुके थे। अर्थात् उपरोक्त इतिहास टोंक रियासत का 37 वर्ष का इतिहास है। इसी कारण इसका नाम भी

श्हफतदसाला अमीर एवं बिस्तसाला वजीर अर्थात् 17 वर्ष अमीर खाँ के शासन को और 20 वर्ष वजीर खाँ के शासन को हुए थे। यह किताब राजपूताना के रेजीडेन्ट सर हेनरी लांटस के परामर्श द्वारा सन् 1853–54 ई० में नवाब वजीरुद्दौला के समय में लिखी गई थी जो टोंक के ए.पी.आर. आई. टोंक में मौजूद है।

यह पुस्तक स्वर्गीय शम्सुद्दीन ने फारसी भाषा में लिखी थी जो रियासत टोंक के दीवान थे। ऐसी स्थिति में उन्होंने इस पुस्तक में ऐसी बातें लिखीं जो नवाब की मर्जी के खिलाफ नहीं थीं। फिर भी उन्होंने जो कुछ देखा उसका ईमानदारी से वर्णन किया। यह किताब अप्रकाशित है तथा हिन्दी अथवा अँग्रेजी में इसका कोई अनुवाद ही नहीं हुआ है। उपरोक्त इतिहास के पश्चात् उर्दू भाषा में टोंक का एक इतिहास मुन्शी रामकरण ने सन् 1892 ई० में गुलजारे इब्राहिम के नाम से लिखा था। जिसमें टोंक की भौगोलिक स्थिति का ही वर्णन किया है। इस पुस्तक का मूल ग्रन्थ ए. पी. आर.आई. टोंक (अरबी फारसी शोध संस्थान जो नवाब मोहम्मद अली खाँ के द्वारा अरबी, फारसी व उर्दू में लिखी पुस्तकों का अनुवाद व सम्पादन के कार्य को अन्जाम दिया जो वर्तमान में ए.पी. आरआई. टोंक की नींव बनी) में उपलब्ध है। इसी प्रकार 'हदीकऐ राजस्थान' अर्थात् तारीखे टोंक लेखक उस्ताद आबरु प्रकाशन 1901, 'तजकरऐ टोंक' लेखक सा. अबदत्तवाब खाँ, श्इफ्तिरवारत्तवारीखश लेखक मुंशी देवी प्रसाद श्बशशाशश आदि के नाम पेश किये जा सकते हैं। टोंक रियासत के इतिहास की यह पुस्तकें राजस्थान की स्थापना से पूर्व की हैं। इनके अतिरिक्त अनेकों पुस्तकें रियासत की समाप्ति के पश्चात् भी लिखी जाती रही हैं।

रियासत टोंक की स्थापना सन् 1817 ई० में हुई थी और सन् 1948 ई० तक रियासत कायम रही। इसमें रियासत के सात नवाबों की जीवनी व ऐतिहासिक कारनामों के वर्णन आधारित हैं और रियासत काल में इन नवाबों ने अपने दौर में बहुत से कार्यों को पूर्ण किया। यहाँ यह बताना भी आवश्यक है कि नवाब अमीर खान बहादुर के इतिहास पर श्अमीर नामा एक मात्र ऐसा ग्रन्थ है जो वास्तव में अमीर नामा रियासत टोंक का इतिहास ही नहीं अपितु नवाब अमीर खान के जीवन को भी विस्तृत करता है तथा रियासत की स्थापना तक के समय को व्यक्त करता है।

यह पुस्तक सन् 1825 ई० में फारसी भाषा में स्वर्गीय मुन्शी बसावन लाल शांदा जो नवाब अमीर खान के लेखक थे उन्होंने लिखी थी किन्तु वह अप्रकाशित रही। अमीरनामा के बारे में आमतौर पर यह किंवदन्ती है कि वो फारसी में वर्णित टोंक स्टेट का इतिहास है। किन्तु यथार्थ में वह टोंक का इतिहास ही नहीं अपितु टोंक रियासत के प्रथम शासक एवं स्थापक नवाब अमीर खान की जीवनी का विस्तृत वर्णन है जिसमें अमीर खान के बहुत से ऐसे व ऐसी बहुत सी बातें सम्मिलित हैं जिनके साक्ष्य उस समय में स्वयं नवाब श्अमीर नामाश के लेखक मुन्शी बसावन लाल द्वारा देखा गया। मुंशी बसावन लाल नवाब अमीर खान की सेना में कर्मचारी थे और उनका काम कार्यालय से संबंधित था। सन् 1806 ई० में जब टोंक नवाब अमीर खान का अधिकृत अधिकार था तो उसी समय से सेना के लोग भी रहने लगे थे। तथा सन् 1817 ई० में नवाब अमीर खान और अँग्रेजों के बीच हुई एक सन्धि के पश्चात् टोंक रियासत की स्थापना हुई और नवाब अमीर खान एक शासक के रूप में टोंक में रहने लगे थे तथा सन् 1825 ई० में बसावन लाल ने अमीर नामाश लिखा था। अर्थात् अमीर–नामा की रचना रियासत टोंक की स्थापना के समय में ही हुई इसमें रियासत के स्थापना काल का वर्णन है।

तदोपरान्त स्वर्गीय सैयद असगर अली आबरु ने एक ग्रंथ तारीखे टोंक 'हदीकऐ राजस्थान' के नाम से लिखा। 13 जून, सन् 1901 ई० को सितारा–ए–हिन्द आगरा, हिन्दू प्रेस द्वारा यह किताब प्रकाशित हुई। जो टोंक के इतिहास से ही संबंधित है। उपरोक्त समय के पश्चात् रियासत टोंक के इतिहास से संबंधित और भी पुस्तकें लिखी जाती रहीं जिनमें टोंक रियासत की स्थापना सन् 1947 तक का वर्णन मिलता है।

अमीर नामा टोंक के इतिहास का एक यादगार ग्रन्थ है क्योंकि स्वयं नवाब अली खान साहब ने यह ग्रंथ लेखक स्वर्गीय बसावन लाल शांदा से लिखवाया है। यह मूल ग्रंथ (फारसी) अब तक प्रकाशित नहीं हुआ है, यद्यपि इसके अनुवाद हुए हैं। फारसी में जफरनामा अमीरनामें का (पद्यमय) अनुवाद है जिसका अनुवाद श्पाईन्दा खाँ निकहतश ने किया था और स्वर्गीय अहमद अली सीमाव ने इसका उर्दू में अनुवाद किया। इसी प्रकार स्वर्गीय हकीम सैयद असगर अली ने भी इसका उर्दू में अनुवाद किया। इसी प्रकार इसका प्रिसेंप ने अँग्रेजी में अनुवाद किया और फिर इसका हिन्दी में अनुवाद हुआ और टोंक से सन् 2003 ई० में प्रकाशित हुई। इस हिन्दी अनुवाद के अतिरिक्त उपरोक्त समस्त अनुवाद दुर्लभ और अप्राप्य हैं।

**रियासत टोंक के नवाबों का पारिवारिक वंश**

**नवाब अमीर खाँ–**

टोंक रियासत के प्रथम नवाब अमीर खान थे जिनका शासनकाल सन् 1817 ई० से सन् 1834 ई० तक रहा। इन्होंने ही रियासत टोंक की स्थापना की थी। नवाब अमीर खाँ एक शूरवीर और बहादुर सेनानी थे नवाब अमीर खाँ और श्ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बीच एक सन्धि हुई और सन् 1817 ई० में टोंक रियासत की स्थापना हुई थी। नवाब अमीर खाँ टीपू सुल्तान के शासन के बाद एकमात्र ऐसे मुस्लिम शासक थे, जो अपनी रियासत को एक संगठित रूप से स्थापित कर सके। इस रियासत में हिन्दुओं की संख्या अधिक व मुस्लिमों की संख्या कम थी। नवाब अमीर खाँ अपनी लगन और मेहनत से टोंक के नवाब नियुक्त हुए नवाब अमीर खाँ के दरबार में बहादुर योद्धाओं और सिपाहसालारों का एक मजबूत संगठन मौजूद था। इनका शासन अन्य मुस्लिम शासकों की अपेक्षा श्रेष्ठ था।

आपका व्यक्तिगत चरित्र धर्म के प्रति आस्थावान था और आप इस्लामी धर्म के अनुयायी थे। इनके शासन में प्रजा अपना जीवन बहुत सुख शांति से व्यतीत कर रही थी । नवाब अमीर खाँ हिन्दू व मुस्लिम दोनों को एक दृष्टि से देखते थे आपने अपने शासन के दौर में बहुत से निर्माण कार्य पूरे किये। आपने अपनी प्रजा की सुख–सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा। आपने रियासती दौर में पूर्ण शासन किया तथा टोंक के अतिरिक्त अन्य परगनों की भी उचित ढंग से देखरेख की, व सिंरोज में आपने अपने पुत्र वजीरुद्दौला को नियुक्त किया जो बाद में टोंक के नवाब नियुक्त हुए इसी तरह अन्य परगनों में भी उच्च पदाधिकारियों को नियुक्त किया हुआ था व स्वयं भी समय–समय पर उनका दौरा करते थे।

नवाब अमीर खाँ निरक्षर होने के बावजूद टोंक में आए विद्वानों व लेखकों का आदर सम्मान करते थे। नवाब अमीर खाँ के रियासती दौर में कला विज्ञान व साहित्य को प्रोत्साहित किया गया। यह टोंक का प्रारम्भिक दौर था जिसमें बड़े–बड़े ज्ञान–साहित्य के लेखक अपना देश छोड़कर टोंक में स्थित हो गये। यहाँ कला साहित्य का तात्पर्य यह है कि यहाँ आए अरबी, फारसी के लेखकों, विद्वानों की लेखन पद्धति बहुत ही उत्कृष्ट थी। जैसे कोई छपी किताब तथा किताबों के प्रारम्भिक भाग में उनमें बेल–बूटे बनाना व नक्कासी का कार्य करना जो हमें सुनहरी कोठी आज भी उस दौर की याद दिलाती है। नवाब अमीर खाँ के दौर में उर्दू भाषा का चलन हो चुका था। परन्तु आपने फारसी भाषा को ही अपने दरबार में प्रचलित किया और आपने फारसी विद्वानों व लेखकों को एकत्रित कर अपने दरबार में नियुक्त किया। नवाब अमीर खाँ के समय में विभिन्न स्थानों से लेखक व विद्वानों का आगमन हुआ और कुछ विद्वानों को नवाब साहब स्वयं अपने दरबार में लाए। नवाब अमीर खाँ के दौर के प्रसिद्ध व्यक्तियों में स्वर्गीय रायदाता राम नवाब साहब के दरबार में एक मंत्री थे। आपका दरबार में उच्च स्थान था। इसी प्रकार स्वर्गीय फकीर मोहम्मद साहब श्गोयाश आप बहुत अच्छे कवि और शायर थे। स्वर्गीय मौलवी मोहम्मद साहब, स्वर्गीय मौलवी सईदुल्ला साहब, स्वर्गीय राय निरंजन लाल साहब, स्वर्गीय मुन्शी बसावन लाल कायस्थ, स्वर्गीय नोशे मियाँ आदि जिनका वर्तमान में श्नौशेमियाँ का पुलश के नाम से स्थित है ये सभी विद्वान् आपके दरबार में नियुक्त थे। नवाब अमीर खाँ के दरबार में विशेष रूप से इस्लामी धर्म को प्रोत्साहित किया जाता था और मुसलमानों में शिक्षा का स्वरूप धार्मिक शिक्षा तक ही सीमित रहा और इसी कारण उस दौर में संगीत एवं नृत्य को उस समय कोई प्रोत्साहन नहीं मिला। क्योंकि इस्लामी धर्म में संगीत और नृत्य को वर्जित माना जाता था। परन्तु फिर भी उस दौर में शायरी, कव्वाली और चारर्खेत का रिवाज टोंक में बढ़ने लगा था जिसका सम्बन्ध संगीत से हो सकता है और रियासत के प्रथम नवाब अमीर खानन का देहान्त 30 सितम्बर, सन् 1834 ई० को हुआ । इस प्रकार अमीर खाँ ने रियासत टोंक पर 17 साल शासन किया। उनके पश्चात् उनके पुत्र नवाब वजीरूद्दौला गद्दी पर आसीन हुए ।

**नवाब वजीर खाँ–**

नवाब अमीर खाँ साहब के बड़े पुत्र और टोंक रियासत के द्वितीय शासक नवाब वजीर खाँ का जन्म सन् 1806 ई० को हुआ था। नवाब अमीर खाँ ने अपने पुत्र का नाम वजीरुद्दौला रखा था और पूरी रियासत में खुशी का वातावरण छा गया था। नवाब अमीर खाँ के चौदह पुत्र थे। आपके सबसे बड़े पुत्र नवाब वजीर खाँ सन् 1834 ई० में टोंक रियासत के शासक नियुक्त हुए।

नवाब वजीर खाँ की शिक्षा देहली के शाह अब्दुल कादिर रहमतुल्ला अलेह देहलवी के मदरसे में हुई। नवाब वजीरुद्दौला का दरबार महान् विद्वानों, बुद्धिमान राजनीतिज्ञों, कला, विद्या, सभ्यता व संस्कृति से परिपूर्ण दरबार था। नवाब वजीर खाँ एक रोबीले व्यक्तित्व के नवाब थे। आपका रियासत में एक दबदबा था, और आप दरबार में इस्लामी धर्म व परम्पराओं के अत्यधिक पाबन्द थे। आपके दरबार में विद्वानों व साहित्यकारों का अत्यधिक सम्मान था। आप एक धार्मिक व्यक्ति थे और रियासत दौर में आपने सामाजिक व धार्मिक वातावरण स्थापित किया। आपने धार्मिक क्षेत्र के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत योगदान दिया । नवाब वजीरुद्दौला ने अपने दरबार में प्रजा के प्रति सभी तरह के कार्यों को पूर्ण करने में बहुत योगदान दिया। नवाब वजीर खाँ ने रियासत टोंक को ही विकसित नहीं किया बल्कि रियासत के अन्य परगनें सिरोंज, पिडावा, छबड़ा, निम्बाहेडा और अलीगढ़ आदि जो बहुत पिछड़े हुए थे उन्हें पूर्ण रूप से विकसित किया। नवाब वजीरुद्दौला आत्म–सम्मान, सभ्यता व न्यायप्रियता के धनी थे। आप इस्लाम धर्म का पालन करते थे।

आपके दरबार में फारसी व अरबी साहित्य को आदर व सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। टोंक में दूर–दूर से आए लोग उर्दू, फारसी व अरबी कलाओं से आकर्षित होने लगे और इन्हीं के समय में दिल्ली व लखनऊ के विद्वानों का टोंक में आगमन हुआ। यहाँ इनकी संख्या इतनी बढ़ गई कि टोंक हिन्दुस्तान का अरबी, फारसी साहित्य का एक बड़ा केन्द्र बन गया । नवाब अमीर खाँ ने रियासती दौर में हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध व विख्यात विद्वानों को टोंक बुलाकर उनको सम्मानित किया। इनमें स्वर्गीय सैयद हैदर अली साहब, स्वर्गीय हकीम दाईम अली साहब, स्वर्गीय हकीम नाजीश साहब खैराबादी तथा स्वर्गीय नवाब अहमद खाँ नौशेमियाँ आदि थे। जिनकी लिखने की कला अत्यन्त आकर्षित थी। स्वर्गीय साहबजादा अहमद अली खाँ रौनक जो कवि थे आप नवाब इब्राहिम अली खाँ के शासन काल तक रहे नवाब वजीर खाँ साहब स्वयं भी एक बहुत अच्छे विद्वान् थे। क्योंकि आपकी शिक्षा भी धार्मिक विद्वानों की संगति में पूर्ण हुई। आप इस्लामी धर्म मोहम्मद साहब के अनुपालक थे। इसी वजह से आज भी टोंक में कण्ठस्थ कुरान शरीफ पढ़ने वाले मौलवी व हाफिज अत्यधिक मात्रा में मौजूद हैं।

नवाब वजीर खाँ के दरबार में उर्दू शेरो–शायरी का रिवाज बढ़ने लगा। आपकी शिक्षा दिल्ली में हुई थी। इसी कारण आपका सम्पर्क वहाँ के प्रसिद्ध विद्वान् शायरों से हुआ था। उनमें मिर्जा गालिब, मोमीन और जोक आदि प्रसिद्ध विद्वानों से सम्पर्क हुआ। यही नहीं मिर्जा गालिब का कोई भी लेख या किताब छप कर आती तो उस किताब की कॉपी (प्रति) नवाब वजीर खाँ को अवश्य भेजी जाती थी। 20 नवाब वजीर खाँ के दौर में यहाँ बहुत से विद्वान् और शायर (कवि) टोंक में स्थापित हो गए इनमें उर्दू शायरी के उस्ताद आबरु, स्वर्गीय उस्ताद जाम साहब, स्वर्गीय उस्ताद सोलत सहिद, स्वर्गीय उस्ताद शफीक अहमद रजा साहब, स्वर्गीय बज्मी साहब, स्वर्गीय बिस्मिल सईदी, स्वर्गीय अख्तर शीरानी, स्वर्गीय हजरत सैयद, स्वर्गीय मौलवी इलाही बया आदि विद्वान् व शायर आपके शासनकाल में मौजूद थे। नवाब वजीरुद्दौला के रियासती दौर में उर्दू शायरी का चलन बढ़ने लगा और चारबैत के रिवाज को भी प्रोत्साहन मिला। आपके दौर में अरबी, फारसी, साहित्य का टोंक में बहुत प्रचलन रहा। हिन्दू, मुसलमान सब फारसी भाषा पढ़ते थे। परन्तु इस्लामिक धर्म के प्रभाव के कारण शाही महल और दरबार में संगीत को प्रोत्साहन नहीं मिला। न ही उस दौर में कोई संगीत के कलाकार रहे।

आपके समय में सिर्फ अरबी, फारसी के विद्वानों का यहाँ आगमन हुआ जिन्होंने टोंक में धार्मिक शिक्षा को विकसित किया। और सन् 1864 ई० में आपका देहान्त हो गया तथा उसके बाद आपके पुत्र नवाब मोहम्मद अली खाँ रियासत के तीसरे नवाब गद्दी पर नियुक्त हुए।

**नवाब मोहम्मद अली खाँ–**

नवाब वजीर खान के पुत्र नवाब मोहम्मद अली खाँ रियासत टोंक के तीसरे शासक नियुक्त हुए नवाब मोहम्मद अली खाँ एक उच्चकोटि के विद्वान् व साहित्यकार थे और आपका रियासती दौर बहुत संक्षिप्त था। आप सन् 1865 ई० में गद्दी पर नियुक्त हुए और सन् 1867 ई० में आपको गद्दी से निष्कासित कर दिया गया। आपका रियासत काल का समय जनवरी 1865 ई० से 28 अगस्त, सन् 1867 ई० तक रहा। आपको अँग्रेजों ने गद्दी से निष्कासित कर बनारस भेज दिया और आपके बनारस भेजने के पीछे लावा की एक घटना थी। 21 नवाब मोहम्मद अली खाँ को जीवन भर रियासत की ओर से साठ हजार रुपया सालाना पेंशन मिलती रही।

नवाब मोहम्मद अली खाँ अपने पिता वजीर खाँ की तरह इस्लाम धर्म के विद्वान् थे। आपको लेखन का

प्रारम्भ से ही शौक था। पढ़ने व पढ़ाने का भी अत्यन्त शौक था। इन कार्यों में आपकी अत्यन्त रुचि थी जिस कारण आप जीवन भर इन्हीं कार्यों में व्यस्त रहे। आप जब टोंक से बनारस गये तो आपके साथ बड़े–बड़े विद्वान् व साहित्यकार बनारस चले गए जिनमें 39 स्कॉलर्स और 15 (कैलीग्राफिस्ट) सुलेख लिखने वाले आपके साथ गए थे। आपके साथ गए विद्वानों व साहित्यकारों द्वारा बनारस में बहुत बड़ी संख्या में उर्दू, फारसी किताबों का एक संग्रहालय बन गया । आप हस्तलिखित ग्रन्थ व प्रकाशित पुस्तकों को जमा करते रहे। नवाब मोहम्मद अली खाँ को हस्तलिखित ग्रन्थ व कीमती चीजें जहाँ भी मिलते वे अपने आदमियों को भेजकर उसकी (कॉपी) नकल कराते और अपने पुस्तकालय में संग्रह कर लेते। इस प्रकार इन हस्तलिखित ग्रन्थों व पुस्तकों पर धन भी बहुत व्यय हुआ किन्तु आपने अपने समय में रियासती धन का सदुपयोग कर बनारस में बहुत बड़ा पुस्तकालय स्थापित किया था।

आपके साथ बनारस में इस कार्य को सार्थक करने में बड़े–बड़े विद्वान् व साहित्यकार रहे थे। इस कार्य की प्रगति देख आपके बेटे स्वर्गीय नवाब अब्दुल वहाब खाँ, स्वर्गीय नवाब अब्दुल रहीम खाँ और स्वर्गीय मोहम्मद इस्हाक खाँ और आपके पोते नवाब सआदत अली खाँ भी आपके पास बनारस चले गये। इन सभी ने नवाब मोहम्मद अली खाँ के पुस्तकालय के विकास में बहुत योगदान दिया इनके अतिरिक्त आपके छोटे साहबजादे स्वर्गीय अब्दुर्रहीम खाँ ने अपनी सभी सुख–सुविधाओं को छोड़कर अपने पिता की सेवा में लगभग 30 वर्ष बनारस में बिताए और पुस्तकालय को स्थापित करने में अपने पिता की सहायता की।

नवाब मोहम्मद अली खाँ के प्रयासों व उपरोक्त सभी विद्वानों व साहित्यकारों के योगदान से बनारस में एक बहुत बड़ा पुस्तकालय निर्मित हुआ जिसकी रोशनी की किरणें आज टोंक में ए.पी.आरआई. की नींव बनी जिससे आज देश–विदेश के शोधार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

आप एक धार्मिक व्यक्ति थे आपका विद्या व साहित्य के क्षेत्र से गहरा संबंध था। आपने हिन्दुस्तान की विभिन्न कलाओं में दक्ष अरबी, फारसी और उर्दू के विद्वानों और साहित्यकारों को टोंक बुलाया और उनका सम्मान भी किया। आपके शासनकाल के प्रसिद्ध विद्वानों में पहले स्वर्गीय दीवान शम्सुद्दीन साहब और दूसरे मौलाना स्वर्गीय नजफ अली साहब थे, जो नवाब वजीर खाँ के समय में भी उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त स्वर्गीय बिस्मिल खैराबादी, स्वर्गीय अनवर साहब देहलवी, स्वर्गीय सैयद अहमद अली, स्वर्गीय मौलवी सिराजुर्रहमान, स्वर्गीय मौलवी मोहम्मद हसन साहब, स्वर्गीय मौलवी इमामुद्दीन टोंकी (टोंक के रहने वाले) स्वर्गीय मौलवी सुल्तान मोहम्मद, स्वर्गीय हकीम अब्दुल अली साहब टोंकी, स्वर्गीय मौलवी नुरुल हक साहब आदि उपस्थित थे।

इनमें से नवाब मोहम्मद अली खाँ के समय में सर्वप्रथम दीवान शम्सुद्दीन एक कुशल व बुद्धिमान व्यक्ति थे। आप तीनों नवाबों के दौर में थे। आपका देहान्त नवाब इब्राहिम अली खाँ के दौर में हुआ था। आप उर्दू, फारसी के उच्च कोटि के विद्वान् थे। आपके पास लगभग बीस हजार से भी अधिक किताबों का पुस्तकालय था आपको इन सभी का पूर्ण ज्ञान प्राप्त था।

मौलवी सिराजुर्रहमान अरबी, फारसी व उर्दू इन भाषाओं का आपको पूर्ण ज्ञान प्राप्त था और आप नवाब मोहम्मद अली के साथ बनारस भी रहे। इसी प्रकार स्वर्गीय इमामुद्दीन साहब उच्च कोटि के विद्वान् थे जिनसे दूर–दूर से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते थे। इसी तरह स्वर्गीय अहमद करीब साहब भी बहुत अच्छे विद्वान् व शायर थे जो फारसी भाषा के ज्ञाता थे। इस प्रकार नवाब मोहम्मद अली खाँ के दरबार में उर्दू, फारसी के विख्यात कलाकार मौजूद थे।

यह वही दौर था जो फारसी का स्वर्ण युग कहलाता था। नवाब मोहम्मद अली खान के लगन व शौक के कारण ही अरबी फारसी और उर्दू में लिखी किताबों का अनुवाद व सम्पादन के कार्य को अन्जाम दिया। आपके दौर में फारसी भाषा की बहुत प्रगति भी हुई। सन् 1947 ई० में आजादी के बाद व सन् 1948 ई० में रियासत टोंक राजस्थान जिले में स्थानान्तरित हुआ। सन् 1961 ई० में राजस्थान ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट जोधपुर की एक शाखा के रूप में टोंक में डिस्ट्रिक्ट लाइब्रेरी से अलग होकर राजस्थान ओरियण्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट टोंक के नाम से प्रसिद्ध हुआ और सन् 1978 ई० में राजस्थान सरकार द्वारा एक ऐतिहासिक फैसला लिया और जोधपुर की इस ब्रान्च को समाप्त कर इसे अरबी फारसी शोध संस्थान के नाम से एक अलग ही निदेशालय बना दिया। राजस्थान सरकार ने इस संस्थान के विकास के सन्दर्भ में एक मजबूत निर्णय लिया कि राजस्थान के जितने भी सरकारी पुस्तकालयों में अरबी, फारसी के हस्तलिखित ग्रंथ व मुद्रित किताबें जो सुरक्षित हैं, उन्हें टोंक के इस संस्थान में

सुरक्षित रखवाया।

यही नहीं बहुत से निजी कलैक्शन भी इस विभाग में जमा हुए हैं। राजस्थान सरकार के इस महत्त्वपूर्ण कदम से इस संस्थान में राजस्थान में अरबी फारसी किताबों का संग्रह यहाँ एकत्रित हुआ। वर्तमान में यह (APRI) अर्थात् 'अरबी फारसी शोध संस्थान टोंक के नाम से पूरे हिन्दुस्तान में स्कॉलर्स के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान बना हुआ है। इस प्रकार नवाब मोहम्मद अली खाँ का नाम सुनहरे अक्षरों में सदा स्मरणीय रहेगा।

नवाब मोहम्मद अली खाँ के समय में उर्दू शेरो–शायरी का रिवाज बढ़ने लगा था। और टोंक में देश के विभिन्न स्थानों से आए हुए लेखक साहित्यकार और विद्वानों के कारण टोंक उर्दू फारसी साहित्य का राजस्थान में एक बड़ा केन्द्र बन गया। परन्तु संगीत को आपके दौर में कोई प्रोत्साहन नहीं मिला।

***संगीत विभाग**
**वनस्थली विद्यापीठ,**
**जयपुर (राज.)**

**संदर्भ–**

1. चौधरी प्रताप सिंह 'राजस्थानः संगीत और संगीतकार';
2. चौधरी प्रताप सिंह वही;
3. सिंहल हनुमान 'टोंक का इतिहास';
4. खाँ मोहम्मद एज़ाज 'तारीख–ए–टोंक';
5. खाँ मुहम्मद अब्दुल मोईद 'रियासत टोंक के हुक्मराने ज़ीशान' (भाग प्रथम), सीमाब मौलवी अहमद अली 'गुलदस्ताएँ खिरद';
6. सिंहल हनुमान 'टोंक का इतिहास';
7. खाँ मोहम्मद एज़ाज 'तारीख–ए–टोंक';
8. खाँ मुहम्मद अब्दुल मोईद रियासत टोंक के हुक्मराने जीशान (भाग प्रथम);
9. खाँ मुहम्मद अब्दुल मोईद रियासत टोंक के हुक्मराने जीशान (भाग प्रथम), मेहरा डॉ. एस.के. 'अमीर खाँ के हालात और उनका दौर' 1776 ई. से 1834 ई.;
10. खाँ मुहम्मद अब्दुल मोईद 'रियासत टोंक के हुक्मराने जीशान' (भाग प्रथम);
11. आबरू सैयद असगर अली 'हदीकाए राजस्थान';
12. खाँ मुहम्मद अब्दुल मोईद 'रियासत टोंक के हुक्मराने जीशान' (भाग प्रथम);
13. सिंहल हनुमान 'टोंक का इतिहास';
14. खाँ मोहम्मद एजाज 'तारीख–ए–टोंक';
15. खाँ मुहम्मद अब्दुल मोईद 'रियासत टोंक के हुक्मराने जीशान' (भाग प्रथम);
16. खाँ मोहम्मद एजाज 'तारीख–ए–टोंक';
17. खाँ मुहम्मद अब्दुल मोईद 'रियासत टोंक के हुक्मराने जीशान' (भाग प्रथम);
18. सिंहल हनुमान 'टोंक का इतिहास';
19. सिंहल हनुमान 'टोंक का इतिहास';

20. खाँ मुहम्मद अब्दुल मोईद 'रियासत टोंक के हुक्मराने जीशान' (भाग प्रथम);
21. सिंहल हनुमान 'टोंक का इतिहास';
22. खाँ मुहम्मद अब्दुल मोईद 'रियासत टोंक के हुक्मराने जीशान' (भाग प्रथम);
23. खाँ मुहम्मद अब्दुल मोईद 'रियासत टोंक के हुक्मराने जीशान' (भाग प्रथम);
24. सिंहल हनुमान टोंक का इतिहास;
25. खाँ मुहम्मद अब्दुल मोईद 'रियासत टोंक के हुक्मराने जीशान' (भाग प्रथम).